बृहस्पतिवार व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक साहूकार रहता था। उसकी स्त्री बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी और हर बृहस्पतिवार को व्रत रखकर विधिपूर्वक भगवान विष्णु की पूजा किया करती थी। वह कभी भी पीले वस्त्र, पीला भोजन और दान-पुण्य करना नहीं भूलती थी।

एक दिन साहूकार की पत्नी के घर उसकी ननद आई। उसने देखा कि भाभी हर बृहस्पतिवार उपवास करती हैं और पूजन में व्यस्त रहती हैं। वह बोली – "तुम्हें यह सब करने से क्या लाभ ?"

साहूकार की पत्नी ने कहा – "बहन! इस व्रत और पूजन से घर में सुख-समृद्धि रहती है और सब कार्य सिद्ध होते हैं।"

लेकिन ननद ने भाभी को बहकाने का निश्चय किया। वह बोली – "यह सब व्यर्थ है। भोजन मत छोड़ो और न ही पूजा-पाठ में समय गँवाओ।" धीरे-धीरे साहूकार की पत्नी बहन की बातों में आ गई और उसने व्रत-पूजन करना छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में साहूकार के घर में दरिद्रता आ गई। धन नष्ट होने लगा, परिवार में कलह बढ़ गया और घर का सुख-चैन समाप्त हो गया।

साहूकार की पत्नी को तब अपनी भूल का एहसास हुआ। उसने पुनः श्रद्धा और विश्वास के साथ बृहस्पति देव की पूजा शुरू की। नियमित व्रत करने लगी, पीले वस्त्र धारण किए, पीली वस्तुएँ दान कीं और सच्चे मन से प्रार्थना की।

भगवान विष्णु और बृहस्पति देव उस पर प्रसन्न हो गए। शीघ्र ही उसके घर में सुख-समृद्धि लौट आई और जीवन में शांति स्थापित हो गई।
https://www.radheradheje.com/brihaspativar-vrat-katha-aarti-vidhi-mahatva/